

एक नए मुस्लिमि के लिए अध्ययन पद्धति

रेटिंग: 5.0

विवरण: ?????????? ?????? ?? ??????? ?????? ?? ??? ?? ??? ?????? ?????????? ?? ???????

श्रेणी: [पाठ](#) , [इस्लामी जीवन शैली, नैतिकता और व्यवहार](#) , [सामान्य नैतिकता और व्यवहार](#)

द्वारा: NewMuslims.com

प्रकाशति हुआ: 08 Nov 2022

अंतिम बार संशोधति: 07 Nov 2022

उद्देश्य

- व्यवस्थति तरीके से अध्ययन के महत्व को समझना और जो अधिक महत्वपूर्ण है उस पर ध्यान केंद्रति करना।
- ज्ञान को 'धीरे-धीरे' सीखना और अपने ऊपर इसका भार न डालना।
- जो सीखा उसे अपनी क्षमता के अनुसार जीवन में उसका पालन करने का महत्व समझना।
- यह समझना कसिाथी मुसलमानों के साथ लंबी चर्चा और बहस में क्यों न पड़ें।
- ज्ञान प्राप्त करने में वनिम्र होने के बारे में जानना।

अरबी शब्द

- ???? - (बहुवचन - हदीसें) यह एक जानकारी या कहानी का एक टुकड़ा है। इस्लाम में यह पैगंबर मुहम्मद और उनके साथियों के कथनों और कार्यों का एक वर्णनात्मक रकिॉर्ड है।
- ???? - आस्रतिक और अल्लाह के बीच सीधे संबंध को दर्शाने के लिए अरबी का एक शब्द। अधिक विशेष रूप से, इस्लाम में यह औपचारिक पाँच दैनिक प्रार्थनाओं को संदर्भति करता है और पूजा का सबसे महत्वपूर्ण रूप है।
- ???? - "सहाबी" का बहुवचन, जसिका अर्थ है पैगंबर के साथी। एक सहाबी, जैसा क आज आमतौर पर इस शब्द का प्रयोग कया जाता है, वह है जसिने पैगंबर मुहम्मद को देखा, उन पर वशिवास कया और एक मुसलमान के रूप में मर गया।

·???? - इस्लामी चंद्र कैलेंडर का नौवां महीना। यह वह महीना है जिसमें अनविरय उपवास निर्धारित किया गया है।

·???? - अनविरय दान।

·???? - अनुष्ठान स्नान।

·???? - आस्था की गवाही



आप अब जो पाठ पढ़ने जा रहे हैं वह वर्षों के विचार और अनुभव पर आधारित है। इसलिए इसे गंभीरता से लें। सबसे पहले, अधिकांश अन्य धर्मों का पालन करने के लिए सीखना की आवश्यकता नहीं है, लेकिन इस्लाम को अपना जीवन भर सीखने की प्रतिबद्धता है। मुसलमान बनना उतना ही आसान है जितना कशिहादा (या आस्था की गवाही) को पढ़ना, लेकिन इस्लाम के अनुसार जीने के लिए यह

आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने नए धर्म के बारे में ज्ञान प्राप्त करे। एक बार जब कोई व्यक्ति इस्लाम स्वीकार कर लेता है, तो वह यह सीखने के लिए बाध्य हो जाता है कि कैसे अल्लाह की पूजा इस तरह से की जाए जिससे वह प्रसन्न हो। एक मुसलमान के रूप में विकसित होने के लिए व्यक्ति को जीवन भर सीखना होता है। वो हजारों प्रमाणिक हदीस जैसे हम जानते हैं, उससे हमें पता चलता है कि पैगंबर मुहम्मद (उन पर अल्लाह की दया और आशीर्वाद हो) ने हमें ज्ञान प्राप्त करने के महत्व को सख्ती से बताया है।

“ज्ञान प्राप्त करना हर मुसलमान पर एक दायित्व है।”^[1]

दूसरा, सभी शिक्षा व्यवस्थाएं रूप से, चरणों में, एक पद्धति का पालन करते हुए प्राप्त की जाती हैं। एक उदाहरण के रूप में पब्लिक स्कूल की शिक्षा लें। गणित और विज्ञान जैसे आवश्यक विषयों को थोड़ा-थोड़ा करके पढ़ाया जाता है और इसे वर्षों तक दोहराया जाता है जब तक छात्र कॉलेज के लिए तैयार नहीं हो जाता।

एक मुसलमान के रूप में आपके इस्लामी ज्ञान और विकास में निम्नलिखित कुछ महत्वपूर्ण कदम हैं:

1. अनविरय पर ध्यान दें। एक नए मुसलमान का ध्यान प्रार्थना के साथ संयुक्त इस्लामी विश्वास प्रणाली को सीखने पर होना चाहिए। पैगंबर मुहम्मद को 23 साल की अवधि में कुरआन का खुलासा किया गया था और उन्होंने इस्लाम राष्ट्र के बारे में लाए गए नियमों की एक प्रणाली शुरू करने से पहले 13 साल तक सहाबा को सर्वशक्तिमान अल्लाह के बारे में सिखाया था। अल्लाह का ज्ञान और उस पर विश्वास ही इस्लाम की बुनियाद है। प्रार्थना करना सीखने और इसे एक आदत बनाने में कुछ समय लगेगा और आपको

इसे ध्यान से सीखना होगा। इसलिए, नमिनलखिति पर सबसे अधिक ध्यान दें:

·इस्लामी मान्यताएं क्या हैं और क्या उनका खंडन करती हैं, इसके बारे में और अधिक जानें।

·अरबी में नमाज पढ़ना सीखें।

·अरबी भागों का अनुवाद सीखें।

·नमाज में पढ़ने के लिए कुरआन के छोटे छंदों को याद करें।

·आप चाहे कहीं भी हों, सही समय पर नियमि रूप से नमाज पढ़ने की आदत बनाएं।

·नमाज की आध्यात्मिकता को जानें ताकि यह आपके लिए आराम का स्रोत बन जाए।

·???? के उपवास रखें।

·जकात और दान दें।

2. अपने ऊपर इसका भार न डालें। कई नए मुसलमान इस्लाम अपनाने के बाद तीव्र उत्साह और ऊर्जा से भर जाते हैं क्योंकि सीखने के लिए बहुत कुछ है, इसलिए वे जल्दी से सब सीखना चाहते हैं। आप मुस्लि इतिहास, संप्रदायों, हदीस, कुरआन और इसकी व्याख्या, अरबी भाषा, मुस्लि संस्कृति और लोग, पैगंबर मुहम्मद के जीवन और प्रारंभिक मुसलमानों के इतिहास, इस्लामी नैतिकता और धर्मशास्त्र, आदिके बारे में सीख सकते हैं। इस्लाम के बारे में ऐसे कई वीडियो, ऑडियो, वेबसाइट और किताबें, अच्छे और बुरे, छोटे और बड़े, अनुवाद और मूल रचनाएं हैं जिन्हें अंग्रेजी भाषा में सीखना लगभग असंभव है। इसलिए, आपको सावधानीपूर्वक नियोजित कार्यप्रणाली का पालन करना होगा, आप जो पढ़ते और सुनते हैं उसमें चयनात्मक होना होगा, और सामान्य तौर पर आप इस अद्भुत आस्था के बारे में कैसे सीखते हैं, इसके बारे में होशियार होना होगा।

याद रखें "???? ?? ????? ??? ????? ??"। आप किसी प्रतियोगिता में नहीं हैं, इसलिए जल्दबाजी न करें। यद्यपि आपको मुस्लि बनने के बाद अपनी प्राथमिकताओं को फरि से समझने की आवश्यकता है, लेकिन आप अपने ऊपर भार नहीं डाल सकते और जल्दबाजी नहीं कर सकते।

3. आप जो सीखते हैं उसका पालन करें। इस्लामी शिक्षा का उद्देश्य शायद ही कभी जानकारी एकत्र करना होता है। जानें कि एक बेहतर इंसान, एक बेहतर मुस्लि, एक बेहतर माता-पति और एक बेहतर संतान बनने से आपको क्या फायदा होगा। जानें कि आप क्या लागू कर सकते हैं। सीखें क्या बात आपके दिल को सुकून देगी। सीखें कौन सी बात आपको अल्लाह के करीब लाएगी। वजू, गुस्ल, नमाज, उपवास, जकात, और एक मुसलमान के अन्य आवश्यक कर्तव्य की मूल बातें सीखें। इसका मतलब यह नहीं है कि आपको इतिहास

या अन्य वषियों के बारे में नहीं सीखना चाहिए जो आपको पसंद है, लेकिन किसी वषिय के महत्व को समझना चाहिए कि आप इसे कतिना लागू कर सकते हैं। यदि आप आस्था में कमजोर हैं, शायद ही कभी प्रार्थना करते हैं, उपवास नहीं करते हैं, और ड्रग्स, शराब और जुए जैसे प्रमुख नषिधों से नहीं बचते हैं, तो व्याख्यान में भाग लेना, कतिबे पढ़ना, और वभिनिन सांस्कृतिकि प्रथाओं को अपनाना आपके लिए बहुत अच्छा नहीं होगा। अधिक सीखने के साथ-साथ आपके शषिटाचार में भी सुधार होना चाहिए।

4. वाद-ववाद से बचे। मुसलमान कई अलग-अलग पृष्ठभूमिसे आते हैं, वे इस्लाम को अलग तरह से मानते हैं, अलग-अलग वचार रखते हैं और उनकी अलग प्राथमकिताएं हैं। कुछ ऐसे वषिय हैं जनिके बारे में वे ऑनलाइन या मसजिदों में बहुत बहस करते हैं, जैसे रमजान की शुरुआत और अंत का नरिधारण कैसे करें, प्रार्थना का वविरण, दुकानों में उपलब्ध मांस, महिलाओं की भूमकिा और स्थान, राजनीतिकि भागीदारी, और अन्य। वाद-ववाद से बचे। यह दलि को कठोर करता है, आपको बेहतर इंसान नहीं बनाता, नफरत फैलाता है और मुसलमानों को बांटता है।

5. वनिम्र रहे। वनिम्रता मुसलमान का एक अनविरय गुण है। नम्रता का एक पहलू यह है कि दूसरे लोगों को अपने से कमतर समझकर उन्हें नीचा न समझे। पैगंबर ने कहा: "कोई भी व्यक्ति जिसके दलि में एक चीटी जतिना अहंकार का भार है, वह स्वर्ग में प्रवेश नहीं करेगा।" साथियों ने पूछा कि अहंकार क्या है, और पैगंबर ने कहा: "अहंकार सच्चाई को न मानना और खुद को दूसरों से बेहतर समझना है।

एक बड़े ज्जानी व्यक्ति और हमारे पैगंबर मुहम्मद के करीबी साथी और पहले खलीफा अबू बक्र अस-सदिदीक ने कहा, "कोई भी मुसलमान दूसरे मुसलमान को कम न समझे, क्योंकि मुसलमानों में सबसे कम अल्लाह की दृष्टि में महान है।" अक्सर ऐसा होता है कि एक नया मुसलमान कम समय में बहुत अधिक ज्जान प्राप्त कर लेता है और उन लोगों को नीची नजर से देखने लगता है जो मुसलमान के रूप में पैदा हुए थे, जिन्हें कम ज्जान है, या कमजोर और पापी मुसलमान हैं। आपको वनिम्र बने रहने और हर समय खुद को दूसरों से श्रेष्ठ महसूस करते हुए देखने की जरूरत है! आपकी नम्रता इसमें दखिनी चाहिए कि आप दूसरों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं, वशिषकर उनके साथ जिन्हें आप जानते हैं कि वे आपके साथ अच्छा व्यवहार नहीं करते हैं।

फुटनोट:

इस लेख का वेब पता

<https://www.newmuslims.com/index.php/hi/articles/150>

कॉपीराइट © 2011 - 2024 NewMuslims.com. सर्वाधिकार सुरक्षित।